संपादकीय

कृषि मञ्जूषा का प्रवेशांक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। प्रवेशांक के इस स्वरूप में कृषि से संबंधित विभिन्न जाकारियों को समाहित करने के लिये संपादक मंडल बधाई का पात्र है, यह मेरा परम सौभाग्य है कि मैं भी इसका हिस्सा हूँ। हमें आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि इसी तरह आगे भी आप सभी लोगों का स्नेह एवं सहयोग आपकी अपनी पत्रिका कृषि को अनवरत प्राप्त होता रहेगा। इस पत्रिका के प्रकाशन का निर्णय काफी विचार मंथन के बाद किया गया, जिसकी शुरुआत 'सोसायटी फार अपलिफ्टमेंट ऑफ रुरल इकॉनमी' संस्था द्वारा एक दशक सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपलक्ष्य में आयोजित **'नवोन्मेषी कृषि उद्यमिता के माध्यम से ग्रामीण जीविकोपार्जन सुरक्षा'** पर राष्ट्रीय सम्मेलन, जो 12–13 मार्च, 2016 के योजना सत्र के दौरान किया गया था, परंतु इसको अमली जामा पहनाने की अनुमति संस्था द्वारा बिरला तकनीकी संस्थान, पटना, परिसर में 30 अक्तूबर से 01 नवंबर , 2018 के मध्य आयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान प्रदान की गई। इसमें देश के विभिन्न राज्यों से आये हुए प्रगतिशील कृषक बंधुओं के विशेष अनुरोध पर ही अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी को यादगार बनाने हेतु कृषि मञ्जूषा का प्रवेशांक 'अक्टूबर 2018' प्रकाशित किया जा रहा है।

प्रवेशांक मे खेती बारी के सभी आयामों को समुचित स्थान दिया गया है। आशा है कि आवरण लेख "फसल घेरा : क्या है रहस्य ?" रोचक एवं ज्ञान वर्धक लगेगा, जो कि खडी फसल में बनी विशेष आकृति पर आधारित है। इस अंक में फसल उत्पादन तकनीकी, रोग एवं कीट प्रबंधन, सब्जियों एवं फल, तथा पशुपालन पर रोचक एवं ज्ञानवर्धक लेख प्रस्तुत किये गए हैं। 3 जी कटिंग, मँडुआ, संकर टमाटर की वैज्ञानिक खेती, चने मे फली बेधक कीट का समन्वित प्रबन्धन सहित कई किसानोपयोगी लेखों को भी समाहित किया गया है। जापानी फल के बारे में सारगर्भित लेख को स्थान दिया गया है। हमारे पशु जहरीली वनस्पति खा लेते है, उनके लक्षण एवं निदान की भी चर्चा की गयी हैं। पशुओ का बच्चा जनने के बाद जेर ना गिरना एक आम समस्या है, इस पर भी लेख है।

इस पत्रिका में दी गई जानकारी 'इन्द्रधनुषी क्रान्ति' के सपनों को साकार करने में सार्थक एवं सहयोगी भूमिका निभाएगी, इसमें कोई दो मत नहीं हैं। प्रवेशांक में कई ज्ञानवर्धक तकनीकी लेखों का समावेश किया गया है। इस अंक के लिये योगदान देने के लिए देश के विभिन्न अंचलों में कार्यरत कृषि शोध से जुड़े मनीषियों को भी हृदय से धन्यवाद देता हूँ, क्योंकि आपने अपने कार्य अनुभव को इस पत्रिका के माध्यम से कृषि समाज को देने की विशेष कृपा की है। साथ ही साथ हमें इस बात का खेद भी है कि स्थानाभाव के कारण कुछ लेख को स्थान नहीं मिल पाया है, जिसे हम अगले अंकों में प्रकाशित करेंगे। मै आशा करता हूँ, कि प्रवेशांक 'कृषि ही जीवन का मूलाधार है' को चरितार्थ करेगा।

संपादकीय समिति आप सभी महानुभावों के सहयोग के लिए आभार व्यक्त करती हैं।

कृषि मञ्जूषा लेकर आई पाठकों!, बातें कृषि विज्ञान की।
रखती ऐसे विचारों को, जिससे बढ़ सके आय किसान की।।
कृषि में तो आती रहेंगी समस्यायें, जिनका मुश्किल होगा समाधान।
हम मिलकर समाधान खोजेंगे और चर्चा करेंगे निदान की।।

उपरोक्त मुक्तक के साथ मैं अपने लेखनी को विराम देता हूँ।

(अनिल कुमार सिंह)
प्रधान संपादक